Est.: 1980

Pho.: 08482-235209
+91-8147671269

H.K.E. SOCIETY'S

BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION,

BVB CAMPUS, MANHALLI ROAD, BIDAR – 585 403 KARNATAKA, INDIA.

(Recognized by SRC NCTE, New Delhi and Permanent Affiliated to Gulbarga University, Kalaburagi)

E-Mail: principalbcebidar@hkes.edu.in, website: www.hkesbcoebidar.in

CRITERION – II

TEACHING LEARNING AND EVALUATION

2.6: Evaluation Process

2.6.2: Mechanism of internal evaluation is transparent and robust and time bound; Institution adopts the following in internal evaluation

Est.: 1980

Pho.: 08482-235209
+91-8147671269

H.K.E. SOCIETY'S

BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION,

BVB CAMPUS, MANHALLI ROAD, BIDAR – 585 403 KARNATAKA, INDIA.

(Recognized by SRC NCTE, New Delhi and Permanent Affiliated to Gulbarga University, Kalaburagi)

E-Mail: principalbcebidar@hkes.edu.in, website: www.hkesbcoebidar.in

INDEX

Sl. No.	Particulars
B	Assignment & Seminar Copy

IQAC Coordinator
H.K.E.S. Basaveshwar College of Education
BIDAR - 585 403 (Karnataka)

PRINCIPAL
H.K.E.S. Basaveshwar College of Education, BIDAR

GULBARGA UNIVERSITY
KALABURGI

DEPARTMENT OF STUDIES & RESEARCH IN EDUCATION, KALABURGI-585106

विचार संगोष्ठी

NAME OF THE STUDENT : सुवर्णा D/o तुकाराम

ROLL No. : 08/U04AH21E0039

SEMESTER : III 3rd sem B.Ed.

SUBJECT : भाषा बोध का अनुशासन तथा भाषा शिक्षण शास्त्र (हिन्दी)

TOPIC : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

GUIDE : प्रो. वैजिनाथ बिरादर

HYDERABAD KARNATAKA EDUCATION SOCIETY'S
BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION
BIDAR-585 403

YEAR-2023

PRINCIPAL
Basaveshwar College

CamScanner

Roll No. Year Page No.

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

और

उनके प्रमुख रचनाएँ

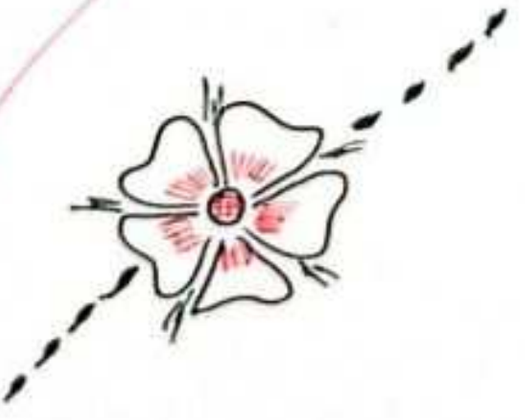

Sharada Book Depot, Opp. B.V.B. College, Bidar. Cell: 9880460930

CamScanner

① प्रस्तावना :-

कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी के युगान्तर - कारी कवि हैं तथा छायावादी कवि चतुष्टय में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, तथा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, छायावाद की वृहत्त्रयी हैं। प्रसाद यदि छायावादी युग के ब्रह्मा, पंत विष्णु तो निराला जी उसके शिवशंकर हैं। आधुनिक युग के नये कवियों में महाप्राण निराला सदा निराले रहे हैं। निराला हिन्दी के प्रयोगधर्मी कवि थे। हिन्दी साहित्य के सबसे बड़े और महान कवि जिनके द्वारा कई कहानी, कविताएं, निबंध लिखे गए हैं। ऐसे महान लेखक और कवि का नाम सूर्यकांत त्रिपाठी निराला है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी के जीवन में कई संकट आए और उन्होंने कभी संकटों से हार ना मानकर अपने नाम का डंका हिन्दी जगत के साहित्यकारों और कवियों के रूप में बनाया इन्हें आधुनिक कवि मानजाते हैं।

CamScanner

II. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का परिचय :-

1 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्म :-

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी 1896 को पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर में हुआ था। उनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी थे जो एक सरकारी नौकरी करते थे।

भाषा :-

पश्चिम बंगाल में पैदा होने के कारण, निराला की मातृ भाषा बंगाली थी

जब सूर्यकान्त बहुत छोटे थे तब उनकी माता का देहांत हो गया था। माता के जाने के बाद, निराला का प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों में बीता।

निराला का विवाह :-

निराला का विवाह "मनोहरी देवी" के साथ हुआ। मनोहरी ने निराला को हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित किया। 20 वर्ष की आयु में निराला ने हिन्दी सीखी। हिन्दी सीखने के बाद उन्होंने बंगाली के बजाय हिन्दी में ही कविताएँ लिखनी शुरु की। विवाह के बाद उनका बचपन की तुलना में ठीक चल रहा था। परन्तु निराला जब 22 वर्ष के थे तब उनकी पत्नी का भी देहांत हो गया।

पुत्री :-

उनकी एक पुत्री भी थी। पुत्री के विवाह के बाद, वह भी विधवा हो गयी और कुछ समय बाद उसका भी देहांत हो गया। इन दोनों की मृत्यु का कारण 1918 के समय में चल रही फ्लू की बिमारी थी। पत्नी व पुत्री की मृत्यु के बाद, निराला का जीवन नीरस हो गया।

ऐसा कहा जाता है कि महादेवी वर्मा ने निराला को जीवनपर्यन्त 40 वर्ष तक राखी बांधी। वह महादेवी को अपनी मुँहबोली बहन मानते थे।

कार्य क्षेत्र :-

उन्होंने पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में की थी इसके पश्चात उन्होंने 1918 से 1922 तक यहा पर नौकरी की इसके पश्चात व संपादन, अनुवाद कार्य और स्वतंत्र लेखन में प्रवृत्त हो गए। इस दौरान उन्होंने कई स्वतंत्र लेखन में प्रवृत्त हो गए। 1934 से 1940 तक, 1942 से मृत्यु तक इलाहाबाद में रहकर भी उन्होंने अनुवाद कार्य साथ ही स्वतंत्र लेखन का कार्य किया था।

CamScanner

लेखन कार्य :-

1920 ई के आसपास उन्होंने अपना लेखन कार्य शुरू किया था। उनकी सबसे पहली रचना एक गीत जन्म भूमि पर लिखी गई थी। 1916 ई में उनके द्वारा लिखी गई 'जूही की कली" बहुत ही लंबे समय तक का प्रसिद्ध रही थी और 1922 ई में प्रकाशित हुई थी।

निराला की पहली और अंतिम रचना

पहली रचना : "जूही की कली" - 1916

अंतिम कविता : "पत्रोत्कंठित" - 1961

(11) रचनाएँ एवं कृतियाँ :-

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी बहुमुखी प्रतिभा वाले साहित्यकार थे। कविता के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध, आलोचना और संस्मरण भी लिखे हैं। उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं -

परिमल, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपरा, बेला, नये पत्ते, अलका, प्रभावती, अप्सरा, तथा, निरुपमा, आदि उनकी श्रेष्ठ गद्य-रचनाएँ हैं।

CamScanner

(ii) निराला की सामाजिक - सांस्कृति दृष्टि

कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी के युगान्तर -कारी कवि है तथा छायावादी कवि चतुष्टय में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। निराला की रचनाओं में आक्रोश एवं विद्रोह की प्रधानता है जिसे डॉ. रामविलास शर्मा ने ओज और औदात्य कहा है। सामाजिक विषमता के विरुद्ध वे प्रभावी आवाज उठाते रहे। उनके काव्य का मूल स्वर क्रान्तिकारी एवं विद्रोही भावनाओं से युक्त है। यथा:-

"चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए॥"

"बादल राग" कविता में कवि बादलों का आह्वान करता हुआ कहता है कि हे वीर बादलो! तुम भारत के इन दीन -हीन किसानों की पुकार को सुनकर यहाँ विप्लव मचाने कोलिए अवश्य पधारो। पूंजीपतियों को वे आड़ना दिखाकर कहते हैं कि तुम्हारी यह 'रंगो आब' चमक-दमक गरीबों के शोषण पर आधारित है।

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत, जो पाई खुशबू रंगो आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपेटलिस्ट।"

CamScanner

"भिक्षुक' वह तोड़ती पत्थर ' जैसी कविताएँ गरीबों के प्रति सहानुभूति से भरी हुई हैं।

Q. निराला की प्रगति चेतना

कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला को यद्यपि छायावादी कवियों में स्थान दिया गया है। तथापि उनकी रचनाओं में "प्रगतिवादी" तत्व प्रचुरता से उपलब्ध होते हैं। प्रगतिवाद से अनुप्राणित कवियों ने सामाजिक विषमता पर आक्रोश व्यक्त किया, शोषण का विरोध किया, शोषण का विरोध किया, गरीबों एवं दीन असहाय व्यक्तियों की दीन-हीन दशा का चित्रण करते हुए उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की, पूँजीपतियों की प्रवृत्तियों का विरोध किया एवं पुरानी सड़ी-गली रूढ़िवादिता को हटाकर नवीनता लाने का समर्थन किया। वह तोड़ती पत्थर कविता का मूल स्वर प्रगतिवादी चेतना से युक्त है।

Q. निराला और मुक्त छन्द :-

निराला छन्द योजना की दृष्टि से भी क्रान्तिकारी एवं विद्रोही कवि हैं, उन्होंने छन्द सम्बन्धी प्राचीन मान्यताओं को आमूलचूल परिवर्तित करते हुए "मुक्त छन्द" में काव्य सृजन प्रारम्भ किया। जिससे कवियों को कविता को मुक्त लेखकी सरलता एवं स्वच्छन्दता का अनुभव हुआ।

CamScanner

VII. निष्कर्ष :-

आधुनिक युग के नये कवियों में महाप्राण निराला सचमुच निराले रहे हैं। महाप्राण सूर्यकांत निराला का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व सर्वत्र एक अद्भुत निरालेपन से परिव्याप्त है। अतः यह कहा जा सकता है कि छायावाद को अद्वैतवाद दर्शन की दृढ़ भित्ति पर स्थित करने का सर्वाधिक श्रेय निराला जी को है। छायावादी काव्य के इतिहास में पन्त के "पल्लव" के समान निराला के "परिमल" का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इन्हें छायावाद का प्रतिनिधि काव्य कहा जा सकता है। निराला स्वभावतः रूढ़ि विरोधी एवं क्रान्तिकारी कवि थे। रूढ़ियों का विरोध उनकी कविता में सर्वत्र दिखाई पड़ता है।

आधार ग्रंथ :-

1). प्रतियोगिता साहित्य
= डॉ. अशोक तिवारी

2). हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ
= डॉ. शिवकुमार शर्मा

CamScanner

GULBARGA UNIVERSITY
KALABURGI

DEPARTMENT OF STUDIES & RESEARCH IN EDUCATION, KALABURGI-585106

अभिहस्तान्कन

NAME OF THE STUDENT : सुवर्णा D/o तुकाराम

ROLL No. : 08/U04AH21E0039

SEMESTER : III[rd] Sem B.Ed

SUBJECT : भाषा बोध का अनुशासन तथा भाषा शिक्षण शास्त्र (हिन्दी)

TOPIC : हिन्दी का पाठ्यचर्या : भाषा का स्थान, स्वरूप और महत्व

GUIDE : प्रो वैजिनाथ बिरादर

HYDERABAD KARNATAKA EDUCATION SOCIETY'S

BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION

BIDAR-585 403

YEAR- 2023

IQAC Coordinator
H.K.E.S. Basaveshwar College of Education
BIDAR - 585 403 (Karnataka)

PRINCIPAL
H.K.E.S.Basaveshwar College of Education BIDAR

CamScanner

GULBARGA UNIVERSITY
KALABURGI

DEPARTMENT OF STUDIES & RESEARCH IN EDUCATION, KALABURGI-585106

अभिहस्तान्कन

NAME OF THE STUDENT : सुवर्णा D/o तुकाराम

ROLL No. : 08/U04AH21E0039

SEMESTER : IIIrd B.Ed

SUBJECT : भाषा बोध का अनुशासन तथा भाषा शिक्षणशास्त्र (हिन्दी)

TOPIC : हिन्दी का पाठ्यचर्या : भाषा का स्थान, स्वरूप और महत्व

GUIDE : प्रो. वैजिनाथ किणगे

HYDERABAD KARNATAKA EDUCATION SOCIETY'S
BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION
BIDAR-585 403

YEAR-2023

CamScanner

GULBARGA UNIVERSITY

KALABURGI

DEPARTMENT OF STUDIES & RESEARCH IN EDUCATION,
KALABURGI-585106

AND

HYDERABAD KARNATAKA EDUCATION SOCIETY'S
BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION
BIDAR-585 403

DECLARATION

I, *Mr./Mrs*.....सुवर्णा D/o तुकाराम..... *Declare that, it is the original work carried out by me, under the guidance of* ...प्रो. वैजिनाथ बिरादार..... *in the subject*..भाषा बोध एवं अनुशासन तथा भाषा शिक्षण शास्त्र (हिन्दी)..... *entitled* .....हिन्दी पाठ्यचर्या: भाषा का स्थान स्वरूप और महत्व..... *for the fulfillment of* .....IIIrd..... *Semester of the B.Ed. Course for the academic year*.....2023..... *As prescribed by the Gulbarga University, Kalaburgi. It is also declare that, no part of full of it is submitted to any other degree or course.*

Suvarna
Student Signature

Place: बीदर

Date: 10/4/2023

CamScanner

GULBARGA UNIVERSITY

KALABURGI

DEPARTMENT OF STUDIES & RESEARCH IN EDUCATION, KALABURGI-585106

AND

HYDERABAD KARNATAKA EDUCATION SOCIETY'S
BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION
BIDAR-585 403

CERTIFICATE

This is to certify that Mr./Mrs. सुवर्णा D. तुकाराम *of HKES Basaveshwar College of Education, Bidar has satisfactorily completed the* अभिहस्तांकन *Work entitled* हिन्दी का पाठ्यचर्या: भाषा का स्थान, स्वरूप और महत्व *in the subject* भाषा बोध का अनुशासन तथा भाषा शिक्षाशास्त्र (हिन्दी) *of* IIIrd *Semester for the year* 2023*, which is required for the fulfillment of the B.Ed. Course, as prescribed by the Gulbarga University, Kalaburagi.*

Incharge Lecturer

CamScanner

GULBARGA UNIVERSITY
KALABURGI

DEPARTMENT OF STUDIES & RESEARCH IN EDUCATION, KALABURGI-585106

AND

HYDERABAD KARNATAKA EDUCATION SOCIETY'S BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION BIDAR-585 403

Sl.No.	Content	Page No.
I	प्रस्तावना	1
	हिन्दी का पाठ्यचर्या : भाषा का स्थान, स्वरूप और महत्ता।	2
1.1	पाठशाला में हिन्दी का महत्व	
1.2.	हिन्दी की संकल्पना और उसका स्वरूप	12
1.3	पाठशाला का पाठ्यचर्या और मनुष्य जीवन में हिन्दी	13
	भाषा का स्थान और इतिहास	14
1.4	मातृभाषा का उद्देश्य और महत्व	15
1.5	प्रथम भाषा में हिन्दी - शिक्षा का माध्यम और भाषा	22
	की वृद्धि।	
	निष्कर्ष	23
	ग्रंथ सूची	24

CamScanner

CamScanner

I. प्रस्तावना :-

हिंदी भाषा शिक्षण के इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण के लिए प्रभावी शिक्षक तैयार करना है। इस पाठ्यक्रम में यह प्रयास किया गया है। कि आप हिन्दी शिक्षण के शिक्षणशास्त्रीय सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करके उनके व्यावहारिक प्रयोग करने की क्षमता आप में विकसित हो सके। हिन्दी को राजभाषा का दर्जा स्वतंत्र भारत की संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को दिया था। आज हिंदी शिक्षक को भी वर्तमान दौर में नई शिक्षण विधियों से परिचित होना होगा जिससे वह शिक्षण की प्रक्रिया में अपने आपको पिछड़ा महसूस न करें। इस पाठ्यक्रम में यह कोशिश की गई है आप हिन्दी की आधुनिक शिक्षण विधियों से परिचित होकर कक्षा में आसान तरीकों से हिन्दी अध्यापन करें जिससे विद्यार्थी व अध्यापक दोनों सहजता अनुभव करें।

Signature

CamScanner

(I) भाषा की परिभाषा :-

1) ह्योजर्स :-
"ध्वनियात्मक शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करने की भाषा।"

2) प्लेटो :-
"भाषा आत्म के मूलतत्व अध्वन्यात्मक प्राणियोंसे ध्वनि होने पर आनेवाली भाषा।"

3) बाबू राम सक्सेना :-
जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है उसे भाषा कहते है।"

भाषा का स्थान :-

भाषा शब्द भाषा (बोलना) धातु से सबंधित है। भाषा एक विचार - विनिमय का साधन है। भाषा को अनेक रूप में देखते है जो अध्यापक टेबल (मेज) पर हाथ पटक कर बच्चों को चुप कराना। किसी के तो एक द्वारा करते है। और पिता अपने बच्चों की आँख में घड़कर देखना ये चुप कराना ये सब भाषा के माध्यम है।

CamScanner

(ii) भाषा की स्वरूप :-

भाषा का निरन्तर विकास हो रहा है। एक भाषा कई रूपों में परिवर्तित हो सकती है। मातृभाषा, राष्ट्रीय भाषा, प्रान्तीय भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा आदि कई भाषायें अपना अस्तित्व बनाये रही हैं। भाषा की प्रकृति की मुख्य विशेषतायें निम्नांकित है।

1) भाषा मूल रूप से एक मौखिक साधन है :-

मनुष्य ने भाषा का पहला प्रयोग बोलकर किया। अर्थात मौखिक ध्वनियों से भाषा की उत्पत्ति हुई। इसलिए इस की मूल प्रकृति "मौखिक" है।

2) भाषा चिह्नात्मक होती है :-

यद्यपि भाषा की मूल प्रकृति मौखिक है परन्तु केवल मौखिक रूप में इस का प्रचार और विस्तार सम्भव नहीं। इस का प्रचार एवं विस्तार तभी सम्भव होता है जब यह लिखी जाती है और इसे लिखने के लिये चिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है।

3) प्रत्येक भाषा की एक लिपि होती है :-

भाषा की चिह्नात्मकता उसे लिपि प्रदान करती है। इसी लिपि से उस भाषा की पहचान होती है।

CamScanner

(ii) भाषा का स्वरूप :-

भाषा का निरन्तर विकास हो रहा है। एक भाषा कई रूपों में परिवर्तित हो सकती है। मातृभाषा, राष्ट्रीय भाषा, प्रान्तीय भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा आदि कई भाषायें अपना अस्तित्व बना रही हैं। भाषा की प्रकृति की मुख्य विशेषतायें निम्नलिखित हैं।

1) भाषा मूल रूप से एक मौखिक साधन है :-

मनुष्य ने भाषा का पहला प्रयोग बोलकर किया। अर्थात मौखिक ध्वनियों से भाषा की उत्पत्ति हुई। इसलिए इस की मूल प्रकृति "मौखिक" है।

2) भाषा चिह्नात्मक होती है :-

यद्यपि भाषा की मूल प्रकृति मौखिक है परन्तु केवल मौखिक रूप में इस का प्रचार और विस्तार सम्भव नहीं। इस का प्रचार एवं विस्तार तभी सम्भव होता है जब यह लिखी जाती है और इसे लिखने के लिये चिह्नों का प्रयोग करना पड़ता है।

3) प्रत्येक भाषा की एक लिपि होती है :-

भाषा की चिह्नात्मकता इसे लिपि प्रदान करती है। उसी लिपि से इस भाषा की पहचान होती है।

CamScanner

4) भाषा सीखी जाती है :-

भाषा जन्म से प्राप्त नहीं होती। यह सीखी जाती है। अर्जित की जाती है। मनुष्य में भाषा सीखने की प्रवृत्ति अवश्य होती है।

5) भाषा अनुकरण से सीखी जाती है :-

मनुष्य भाषा सीखने का पहला प्रयास अनुकरण द्वारा करता है। बच्चा अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को बोलते देखकर उन का अनुकरण करते हुए अपने होंठ और जबान हिलाने लगता है।

6) भाषा निरन्तर गतिशील है :-

भाषा निरन्तर गतिशील रहती है। चिरवाहिनी नदी के समान भाषा का प्रवाह निरन्तर चलता रहता है।

7) भाषा निरन्तर परिवर्तनशील है :-

भाषा हमेशा एक जैसी नहीं रहती है। इधर उधर के शब्दों का चयन करते हुये और उन्हें अपने में समाहित करते हुये वह अपना परिवर्तित करती है। भाषा की यह परिवर्तनशीलता भाषा को सजीवता प्रदान करती है।

CamScanner

8). भाषा में विभिन्नता होती है।-

पहले बताया जा चुका है कि भाषा जन्मजात नहीं होती, बल्कि सीखी जाती है। सीखने की प्रवृत्ति भाषा में विभिन्नता उत्पन्न करती है।

9). भाषा प्रयोगापेक्षी होती है।-

भाषा प्रयोग चाहती है। जिस भाषा का जितना अधिक प्रयोग होता है उतना अधिक उस का विकास और विस्तार होता है।

10). भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों का अर्थ यादृच्छिक होता है।-

भाषा में प्रयुक्त ध्वनियां जिस वस्तु विशेष या क्रिया कलाप का बोध करती है वह यादृच्छिक आधार पर होती है, अर्थात ऐसा मान लिया जाता है।

11) भाषा स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाती है।-

आरम्भ में भाषा स्थूल एवं मूर्त तथ्यों को व्यक्त करती है परन्तु धीरे-धीरे वह सूक्ष्म एवं अमूर्त विचारों को व्यक्त करने में भी समर्थ हो जाती है।

12) भाषा अपौढ़ता से प्रौढ़ता की ओर बढ़ती है।-

अपनी आरम्भिक अवस्था में भाषा अपौढ़ होती है। जैसे जैसे उसका प्रयोग बढ़ता है वैसे वैसे वह प्रौढ़ता की ओर अग्रसर होने लगती है।

CamScanner

V) भाषा का महत्व :-

भाषा मानवजीवन की रीढ़हड्डी है। मनुष्य के व्यक्तित्व का कोई रूप ऐसा नहीं, उसके जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जहाँ भाषा की पहुँच न हो। कवि की व्यापक एवं सूक्ष्म दृष्टि के सम्बन्ध में कहा गया है-

"जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।"

1) व्यक्तित्व के विकास में सहायक
2) विचार विनिमय का सर्वोत्तम साधन
3) लोकतांत्रिक विकास में सहायक
4) ज्ञान के संरक्षण में सहायक
5) ज्ञान के विकास में सहायक
6) शिक्षा का सर्वोत्तम साधन
7) संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण एवं विकास में सहायक
8) राष्ट्रीय एकता में सहायक
9) सामाजिक एवं जातीय एकता में सहायक है
10) अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना में सहायक

CamScanner

1) व्यक्तित्व के विकास में सहायक :-

मनुष्य अपनी भावनाओं तथा विचारों को अभिव्यक्त करना चाहता है। उसी आत्माभिव्यक्ति पर उस के व्यक्तित्व का विकास निर्भर करता है और भाषा आत्माभिव्यक्ति का अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है।

2). विचार विनिमय का सर्वोत्तम साधन :-

विकास प्रक्रिया। विचार विनिमय की मांग करती है, और विचार विनिमय का सर्वोत्तम साधन है भाषा।

3) लोकतांत्रिक विकास में सहायक :-

विचार विनिमय बौद्धिक विकास का द्योतक है, परन्तु लोकतांत्रिक विकास बौद्धिक विकास के साथ साथ नैतिक, चारित्रिक एवं सामाजिक विकास की भी मांग करता है।

4) ज्ञान के संरक्षण में सहायक :-

यह ठीक है कि मनुष्य अपने अनुभवों से सीखता है। परन्तु यह भी ठीक है कि ज्ञान सरिता अविरल प्रवाह की तरह की तरह निरन्तर बह रही है।

CamScanner

5) ज्ञान के विकास में सहायक :-
भाषा में ज्ञान को केवल सुरक्षित रखने की ही क्षमता नहीं है बल्कि ज्ञान के विकास का भी अद्भुत सामर्थ्य है।

6) शिक्षा का सर्वोत्तम साधन :-
प्रकृति ने मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज्ञानेन्द्रियां प्रदान की हैं। परन्तु ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान सीमित होता है।

7) संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण एवं विकास में सहायक :-
किसी भी जाति, समाज और राष्ट्र की पहचान उसकी सांस्कृतिक परम्पराओं से होती है। और संस्कृतिक परम्परा का संरक्षण भाषा द्वारा किया जाता है।

8) राष्ट्रीय एकता में सहायक :-
किसी क्षेत्र विशेष की भाषा वहां के लोगों की इच्छाओं, अभिलाषाओं तथा भावनाओं को व्यक्त करती है। वह उस क्षेत्र की भाषा होती है। संपूर्ण राष्ट्र में भावात्मक एकता स्थापित करने में राष्ट्रभाषा या सम्पर्क भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

CamScanner
CamScanner

9) सामाजिक एवं जातीय एकता में सहायक :-
भाषा अपने राष्ट्रभाषा के रूप में समूचे राष्ट्र को भावात्मक एकता में बान्धती है तो अपने क्षेत्रीय भाषा के रूप में क्षेत्र-विशेष के लोगों की एकता और पहचान का कारण बनती है।

10) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना में सहायक :-
भाषा अपने भिन्न रूपों के माध्यम से जहाँ जातीय एकता एवं राष्ट्रीय एकता के विकास में सहायक होती है। वहाँ अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना एवं भ्रातृभाव के विकास में भी सहायक सिद्ध होती है।

11) आनन्द और मनोरंजन का स्रोत :-
मानवजीवन सदासर्वदा आनन्द और मनोरंजन की तलाश में रहता है। यदि ध्यान से देखा जाये तो सभ्यता और संस्कृति के विकास में भी उस की यही तलाश निहित है।

CamScanner

Q. पाठ्यचर्या का अर्थ :-

पाठ्यचर्या दो शब्दों से मिलकर बना है पाठ्य और चर्या। पाठ्य का अर्थ है 'पढ़ने योग्य' अथवा पढ़ाने योग्य' और चर्या का अर्थ है नियमपूर्वक अनुसरण। इस प्रकार पाठ्यचर्या का अर्थ हुआ - पढ़ने योग्य (सीखने योग्य) विषयवस्तु और क्रियाओं का नियमपूर्वक अनुसरण।

पाठ्यचर्या को अंग्रेजी में (curriculum) कहा जाता है। करिकुलम शब्द लैटिन भाषा से अंग्रेजी में लिया गया है, यह लैटिन शब्द "कुर्रेर" से बना है। 'कुर्रेर' का अर्थ है 'दौड़ का मैदान' यहाँ दो शब्द प्रयुक्त किए गए हैं - दौड़ को छात्रों की क्रियाएँ व अक्रियाएँ तथा मैदान को पाठ्यक्रम या शिक्षण सामग्री के रूप में दर्शाया गया है।

पाठ्यचर्या की परिभाषा :-

1 हेनरी :- "पाठ्यचर्या में वे सभी क्रियाएँ आती है जो विद्यालय में विद्यार्थियों को दी जाती है।"

2. एनन :- "पाठ्यचर्या परीक्षण में होने वाली प्रक्रियाओं का योग है।"

CamScanner

VI. पाठशाला में हिन्दी पाठ्यचर्या का महत्व :-

1. शिक्षण के प्रत्येक स्तर पर भाषा का अलग-अलग महत्व है।

2. भाषा ही विभिन्न विषयों के अध्ययन एवं अध्यापन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन है।

3. ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों को हम भाषा के माध्यम से ही पढ़ते और सीखते हैं।

4. विद्यालयी पाठ्यक्रम में भाषा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

5. विद्यालयी पाठ्यक्रम में भाषा का अध्ययन भिन्न-भिन्न स्तरों पर भिन्न-भिन्न रूपों में होता है।
जैसे:-
मातृभाषा, राजभाषा, सांस्कृतिकभाषा और विदेशी भाषा

6. हिन्दी भाषा का अध्ययन विद्यालयी स्तर पर मातृभाषा और राजभाषा के रूप में किया जा सकता है।

7. विद्यालयी पाठ्यक्रम में हिन्दी विभिन्न स्तरों पर पढ़ाई जाती है।

8. हिन्दी भाषा शिक्षण के इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यालय स्तर पर हिन्दी शिक्षण के लिए प्रभावी शिक्षक तैयार करना है।

CamScanner

VII हिन्दी की संकल्पन और उसके स्वरूप

हिन्दी जिसके मानकीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत की एक राजभाषा है। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

हिन्दी की संकल्पन :-

कार्यालयी भाषा का सीधा अर्थ है कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली भाषा। सरकारी काम-काज और प्रशासन में प्रयुक्त होने वाली भाषा ही कार्यालयी भाषा है। यह बाजार और मीडिया की भाषा से अलग है। वस्तुत: किसी भी भाषा की विविध प्रयुक्तियाँ होती हैं। हिन्दी के भी कई प्रयोग क्षेत्र है अत: कई रंग हैं। कार्यालयों में जैसे हिन्दी का उपयोग होता है वैसे ही हिन्दी साहित्य समाचार-पत्र और सिनेमा में प्रयुक्त नहीं होती। प्रशासनिक प्रयोग के लिए हिन्दी का विशिष्ट स्वरूप निर्मित हुआ है।

CamScanner

VIII) हिन्दी भाषा का इतिहास :-

हिन्दी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं - आठवीं शताब्दी से ही "पद्य" रचना प्रारम्भ हो गयी थी।

मध्यकालीन हिन्दी - मध्ययुग में भक्ति आन्दोलन में हिन्दी खूब फली फूली। पूरे देश के भक्त कवियों ने अपनी वाणी को जन-जन तक पहुँचाने के लिये हिन्दी का सहारा लिया

हिन्दी भाषा के विकास में सन् 1800 में अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज का अहम योगदान है।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी और हिन्दी पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

भारत के स्वतंत्र होने पर हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया।

CamScanner

पाठशाला का पाठ्यचर्या और मनुष्य जीवन में हिन्दी भाषा का स्थान और इतिहास :-

हिन्दी भाषा विशाल जनसमूह की भाषा है, जो सीमाओं के बंधन तोड़कर, आज विश्व के स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। वैसे तो, प्रत्येक भाषा की विशेषता होती है कि वह व्यक्ति के विचारों और मनोभावों को स्पष्ट एवं प्रभावी रूप से व्यक्त करने का एक माध्यम होती है।

हिन्दी भाषा का महत्व :-

1) हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो सभी धर्मों के लोगों को आपस में जोड़ रखने का महत्व करती है, यह सिर्फ एक भाषा का काम ही नहीं करती बल्कि यह एक देश की संस्कृति, तेजस्विता और रहन-सहन तथा पहचान भी है।

2) हिन्दी को संस्कृत की बड़ी बेटी का दर्जा भी प्राप्त है, हिन्दी भाषा बहुत ही सरल भाषा है जिसे सभी लोग आसानी से सीखकर इसका प्रयोग कर सकते हैं।

CamScanner

पाठशाला का पाठ्यचर्या :-

शिक्षा के उद्देश्य बहुत व्यापक है, बहुमुखी है और समय की आवश्यकता के अनुसार उन में परिवर्तन भी किये जाता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्कूलों में विभिन्न विषय पढ़ाये जाते है और विभिन्न क्रियायें संचालित की जाती है।

पाठ्य - क्रम की आवश्यकता :-

1) पाठ्य - क्रम से शिक्षा के लक्ष्य इंगित होते है। प्रायः कहा जाता है कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना शिक्षा का उद्देश्य है।

2) पाठ्य - क्रम शिक्षण को व्यवस्थित बनाता है। शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए उसका व्यवस्थित होना आवश्यक है।

3) यह शिक्षण को नियमित बनाने में सहायक होता है।

4) उपयोगी - शिक्षण - विधियों के चुनाव में सहायक होता है।

5) इस से अभिभावकों का सहयोग प्राप्त करने में सहायता मिलती है। बच्चों के विकास में बच्चों के अभिभावकों का सहयोग आवश्यक माना जाता है। वे भी अपने बच्चों की प्रगति जानने के इच्छुक होते हैं।

6) पाठ्य-क्रम निरीक्षण में सहायक होता है। अध्यापक के कार्य का निरीक्षण करते रहना मुख्याध्यापक का रूक पूरा करता है।

7) छात्रों की योग्यताओं के मूल्यांकन में सहायक होता है। पाठ्य-क्रम ऐसी तुला है जिस पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है। परीक्षाओं का आयोजन भी पाठ्य-क्रम के आधार पर होता है।

8) समय के सदुपयोग में सहायक होता है। पाठ्य-क्रम में सभी कार्य स्पष्ट होते हैं। अध्यापक को मालूम होता है कि क्या पढ़ाना है और विद्यार्थियों को मालूम होता है कि क्या पढ़ना है।

CamScanner

IV. मातृभाषा का उद्देश्य और महत्व :-

ऊपर कहा जा चुका है कि मातृभाषा बच्चे को माँ के दूध से प्राप्त होती है अर्थात जिस भाषा को प्रयोग माँ और परिवार के अन्य सदस्य करते हैं, बच्चा भी धीरे-धीरे उसी भाषा का प्रयोग करने लगता है। बच्चा इस भाषा को सहज रूप से धीरे-धीरे सीखता है।

मातृभाषा का महत्व :-

1) शारीरिक विकास में सहायक
2) मानसिक विकास में सहायक
3) बौद्धिक विकास में सहायक
4) व्यवहारिक कार्यों में सहायक
5) सामाजिक विकास में उपयोगी
6) अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन
7) ज्ञानार्जन का सशक्त साधन
8) लोकतांत्रिक विकास में सहायक
9) सांस्कृतिक चेतना में सहायक
10) मातृभाषा बच्चे की शिक्षा में सहायक

CamScanner

11) स्कूल और समाज के सम्पर्क में सहायक
12) बच्चे के प्रथम स्कूल - प्रवेश मे सहायक
13) सर्वतोन्मुखी विकास में सहायक

1) शारीरिक विकास में सहायक :-
बच्चा जब से पहले अर्ध प्रस्फुटित शब्दो मे अपने भाव प्रकट करता है। वह शब्दो को तोड कर बोलना सीखता है।

2) मानसिक विकास मे सहायक :-
मातृभाषा मनुष्य के मानसिक विकास मे सहायक सिद्ध होती है। मातृभाषा मानसिक अभिव्यक्ति का सहज स्वभाविक साधन है जो जीवन पर्यन्त उस का साथ देता है।

3) बौद्धिक विकास में सहायक :-
बुद्धि विचार की जन्मस्थली है और मातृभाषा का विचार के साथ गहरा संबंध होता है क्योंकि भाषा केवल विचारो को व्यक्त ही नहि करती बल्कि विचारों को प्रेरित भी करती है।

4 व्यवहारिक कार्यों में सहायक :-
व्यवहारिक कुशलता का पहला पाठ व्यक्ति अपनी मातृभाषा के माध्यम से पढ़ता है। अपने माता - पिता अन्य सगे - सम्बन्धियों से व्यवहार करते समय वह सब से पहले मातृभाषा का व्यवहार करता है।

5) सामाजिक विकास में उपयोगी :-
मनुष्य सामाजीकरण का प्रथम सोपान मातृभाषा है। मनुष्य और समाज का आदान - प्रदान मातृभाषा से आरम्भ होता है।

6) अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन :-
मातृभाषा मनुष्य की भावनाओं और विचारों का महत्वपूर्ण साधन है। यह सहज अभिव्यक्ति के भावात्मक विकास में सहायक होती है।

7). ज्ञानार्जन का सशक्त साधन :-
बौद्धिक विकास के लिए ज्ञानार्जन बहुत आवश्यक है और इस में तनिक भी सन्देह नहीं कि मातृभाषा ज्ञानार्जन का सशक्त साधन है।

Sharada Book Depot, Opp. B.V.B. College, Bidar. Cell: 9880460930

Signature

CamScanner
CamScanner

8) लोकतांत्रिक विकास में सहायक :-

लोकतंत्र कोरा राजनीतिक सिद्धान्त या प्रशासन पद्धति नहीं है बल्कि जीवन पद्धति है। यह पद्धति इस बात की मांग करती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों के साथ-साथ दूसरों के अधिकारों के प्रति भी सजग रहे।

9) सांस्कृतिक चेतना में सहायक :-

किसी भी जाति का अस्तित्व उस की सांस्कृतिक चेतना पर आधारित होता है और सांस्कृतिक चेतना के विकास के लिए मातृभाषा का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

10) मातृभाषा बच्चे की शिक्षा में सहायक :-

मातृभाषा बच्चे की समूची शिक्षा में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा जाती है। शिक्षा औपचारिक (Formal) भी होती है, अनौपचारिक (Informal) भी और अर्द्धऔपचारिक (Non-formal) भी। और इन तीनों प्रकार की शिक्षा में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

Book Depot, Opp. B.V.B. College, Bidar. Cell: 9880460930

11) स्कूल और समाज के सम्पर्क में सहायक :-
स्कूल और समाज एक दूसरे के लिये अवश्यक है। मातृभाषा स्कूल और समाज के बीच सेतु का काम करे।

12) बच्चे के प्रथम स्कूल-प्रवेश में सहायक :-
बच्चों का स्कूल में प्रथम प्रवेश माता-पिता के लिये चिन्ताजनक होता है और बच्चों के लिये दुःखदायक। बहुत कम बच्चे स्कूल के प्रथम प्रवेश समय खुशी का अनुभव करते हैं। अक्सर बच्चों को रोते बिसूरते देखा गया है। इस मुख्य कारण यह होता है कि वह घर के सुपरिचित एवं अनौपचारिक वातावरण से स्कूल अपरिचित एवं औपचारिक वातावरण में जा रहे होते हैं।

13) सर्वतोमुखी विकास में सहायक :-
शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है - व्यक्ति का सर्वतोमुखी विकास। इस विकास के अन्तर्गत व्यक्ति का शारिरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास निहित है।

CamScanner

प्रथम भाषा मे हिन्दी - शिक्षा का माध्यम और भाषा की कडि।

हिन्दी को शिक्षा - माध्यम बनाना तर्क सगंत भी है और न्यायसंगत भी। हिन्दी का विरोध करने वाले भी इसे प्रादेशिक भाषाओं पर हावी होने का हौवा दिखाते हैं, तो कभी इसके शिक्षा माध्यम बनाने की क्षमता पर सन्देह प्रकट करते हैं

हिन्दी - शिक्षा का माध्यम :-

आधुनिक शिक्षा- पद्धति में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। आजकल भारत में शायद ही ऐसी कोई शिक्षा - संस्थ होगी जहां हिन्दी न पढाई जाती हो। प्रत्येक शिक्षा- संस्था में हिन्दी किसी न किसी रूप में पढाई जाती है।

1) मातृभाषा के रूप मे हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास से सबंधित है; जबकि अन्य भाषा (द्वितियभाषा) के रूप मे हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य बालक के भाषिक कौशल के विकास तक ही सीमित है।

CamScanner

Roll No. Year

निष्कर्ष :- हिन्दी भाषा के प्रति हमारा सभी का यह कर्तव्य है कि हमें हिन्दी के विस्तार के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हमें इसका भरपूर सम्मान करना चाहिए। यह भाषा सभी धर्मों को जोड़े रखने का काम करती है। सभी को यह समझना चाहिए कि हिन्दी का प्रयोग करना हीनता का प्रतीक नहीं बल्कि यह हमारा गौरव है। इस प्रोजेक्ट में हमने हिन्दी भाषा का स्थान, स्वरूप, और महत्व। पाठशाला में हिन्दी पाठ्यचर्या और हिन्दी सकलपन, उसका स्वरूप, मातृभाषा का महत्व विस्तार से लिखा गया है।

CamScanner

Roll No. | Year

आधार ग्रन्थ सूची

1) हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ
= डॉ. शिवकुमार शर्मा

2) प्रतिनिधि गीता साहित्य
= डॉ. शिवकुमार शर्मा
डॉ. अशोक तिवारी

CamScanner

GULBARGA UNIVERSITY
KALABURGI

DEPARTMENT OF STUDIES & RESEARCH IN EDUCATION, KALABURGI-585106

ವಿಚಾರ ಸಂಕಿರಣ

NAME OF THE STUDENT : ವೈಷ್ಣವಿ ತಂದೆ ದೇವೇಂದ್ರ ಬಿರಾದರ.

ROLL No. : U04AH22E0014

SEMESTER : ತೃತೀಯ ಸೆಮಿಸ್ಟರ.

SUBJECT : ಆರೋಗ್ಯ ಮತ್ತು ದೈಹಿಕ ಶಿಕ್ಷಣ.

TOPIC : ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣ.

GUIDE : ಶ್ರೀಮತಿ. ವೀಣಾ. ಎಸ್. ಪಾಟೀಲ.

HYDERABAD KARNATAKA EDUCATION SOCIETY'S
BASAVESHWAR COLLEGE OF EDUCATION
BIDAR-585 403

YEAR- 2024.

CamScanner

1) ಪ್ರಸ್ತಾವನೆ :->

ವಿಶ್ವ ಆರೋಗ್ಯ ಸಂಸ್ಥೆಯು ಆರೋಗ್ಯ ಎಂಬ ಪದವನ್ನು ಈ ರೀತಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಸುತ್ತದೆ. "ಕೇವಲ ಯಾವುದೇ ರೋಗಗಳ ಗೈರು. ಹಾಜರಿಯಾಗಲಿ ಅಥವಾ ತಿಯಾನಕ್ಕೆ ಬರುವುದು ಆರೋಗ್ಯವಲ್ಲ- ಅದು ಸಂಪೂರ್ಣ ದೈಹಿಕವಾಗಿ, ಮಾನಸಿಕವಾಗಿ ಹಾಗೂ ಸಾಮಾಜಿಕವಾಗಿ ಉತ್ತಮವಿರುವಿಕೆಯೂ ಆಗಿದೆ."

ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವು ಆರೋಗ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಜನತೆಗೆ ತಿಳಿಸುವುದಾಗಿದೆ. ಸತ್ಸಂಗತಿ ಎಂದರೆ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವು ಆರೋಗ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದ ಇನ್ನೊಂದು ಹೆಸರಾಗಿದೆ. ಜನತೆಯು ತಮ್ಮ ಮಾನಸಿಕ & ಭೌತಿಕ ಆರೋಗ್ಯವನ್ನು ಕಾಯ್ದುಕೊಳ್ಳುವಲ್ಲಿ ಹಾಗೂ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸುವಲ್ಲಿ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವು ಮಹತ್ವದ ಪಾತ್ರವನ್ನು ವಹಿಸುತ್ತದೆ. ನಿಮ್ಮ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಆರೋಗ್ಯ ಶಾಸ್ತ್ರದ ತತ್ವಗಳನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳಲು ಹಾಗೂ ರೂಢಿಗೊಳಿಸಲು ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವು ಅತ್ಯಂತ ಸಹಾಯಕಾರಿಯಾಗಿದೆ.

II) ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣದ ಅರ್ಥ :->

ಆರೋಗ್ಯ ಎಂದರೇನು? ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣ ಎಂದರೇನು? ತಿಳಿದುಕೊಂಡ ಬಳಿಕ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವನ್ನು ಅರ್ಥೈಸಿಕೊಳ್ಳುವುದು ಸುಲಭ ಬಾಳೆಹಣ್ಣು ತಿನ್ನುವಷ್ಟು ಸುಲಭವಾಗಿರುತ್ತದೆ. ಹೇಗೆಂದರೆ ಆರೋಗ್ಯಕ್ಕೆ ಶಿಕ್ಷಣ ಎಂಬ ಪದ ಸೇರಿ ಗಂಧ ಬೆರೆತಂತ ಪ್ರಕ್ರಿಯಂತಾಗಿದೆ. ಇದರಲ್ಲಿ ವ್ಯ-ಯಸನಗಳೆಂಬ ಎರಡಂಶಗಳು ಪ್ರಧಾನವಾಗಿವೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಒಂದಂಶಕ್ಕೂ ಧಕ್ಕೆ ಯಾಗದಂತೆ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳುವುದೆ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವಾಗಿದೆ.

ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವು ಶಿಕ್ಷಣದ ಅವಿಭಾಜ್ಯ ಅಂಗವಾಗಿದೆ. ಇದು ಆರೋಗ್ಯದ ನಿಯಮಗಳ ಮೂಲಕ ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಜ್ಞಾನ ಮಾಡಿಕೊಡುವುದು, ಉತ್ತಮ ರೂಢಿ ಅಭ್ಯಾಸ ಹವ್ಯಾಸಗಳನ್ನು ಬೆಳೆಸುವುದು, ಒಳ್ಳೆಯ ಮನೋವೃತ್ತಿಯನ್ನು ನಿರ್ಮಾಣ ಮಾಡುವುದು ದೇಹದ ಹಾಗೂ ಮನಸ್ಸಿನ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಸೂಕ್ತ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿಕೊಟ್ಟ ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗುವ ಜೀವನದ ಶೈಲಿಯನ್ನು ಬದಲಾಗುತ್ತಿರುವ ಋತುಮಾನಗಳಿಗೆ ಹೊಂದಿಕೊಳ್ಳುವಂತೆ ಮಾಡುವುದಕ್ಕೆ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣ ಎಂದು ಅರ್ಥವಲ್ಲದರೆ, ಇನ್ನೊಂದರ್ಥದಲ್ಲಿ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವೆಂದರೆ ಆರೋಗ್ಯದ ಕುರಿತಾಗಿರುವ ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಸಂಗತಿಗಳನ್ನು ತಿಳಿಸುವುದೆ.

ಅನುಕರಣೆ ಮಾಡಬಲ್ಲ ವ್ಯಕ್ತಿಗಳು ಮತ್ತು ಸಮಾಜಕ್ಕೆ ಜ್ಞಾನವನ್ನು ಸದಾ ವರ್ಗಾಯಿಸುವುದಾಗಿದೆ. ಇಂದ್ರಿಯಗಳನ್ನು ನಿಗ್ರಹಿಸಿ ಸುಖ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಇರುವಂತೆ ಸೂಕ್ತ ಯೋಗದರ್ಶನ ನೀಡುವುದರ ಜೊತೆಗೆ ಸಾಂಕ್ರಾಮಿಕ & ಸಾಂಸರ್ಗಿಕ ರೋಗಗಳ ಕುರಿತು ಹರಡುವ, ತಡೆಗಟ್ಟುವ & ಉಪಚರಿಸುವ ಕ್ರಮಗಳ ಬಗ್ಗೆ & ಆಘಾತಕ್ಕೊಳಗಾದ ವ್ಯಕ್ತಿಯನ್ನು ಪ್ರಾಣಾಪಾಯದಿಂದ ಪಾರು ಮಾಡುವ ಕೌಶಲ್ಯಗಳ ಕುರಿತು ವಿವರವಾದ ಜ್ಞಾನವನ್ನುಂಟು ಮಾಡುವ ಜ್ಞಾನಧಾರೆಯಾಗಿರುವುದಕ್ಕೆ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣ ಎಂತಲೂ ಕರೆಯುತ್ತಾರೆ.

III) ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣದ ವ್ಯಾಖ್ಯೆಗಳು :->

1) ಆನ್ ಡೈ ಕೋಟೆಯಲ್ ರವರ ಪ್ರಕಾರ :->

"ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವು ಒಂದು ಕ್ರಿಯೆಯಾಗಿದ್ದು ಅದು ದೇಹವನ್ನು ಗಟ್ಟಿಗೊಳಿಸುವ ಸಾಧನವಾಗಿದೆ."

2) ಶಿಕ್ಷಣದ ನಿಘಂಟುವಿನ ಪ್ರಕಾರ :->

"ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣವು ಶಿಕ್ಷಣದ ಒಂದು ಅವಿಭಾಜ್ಯ ಅಂಗವಾಗಿದೆ. ಶಿಕ್ಷಕನ ಒಳ್ಳೆಯ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನದ ಮುಖಾಂತರ ವೈಯಕ್ತಿಕ ಮತ್ತು ಸಮುದಾಯದ ಆರೋಗ್ಯವನ್ನು ಕಾಪಾಡಿಕೊಳ್ಳುವುದಾಗಿದೆ."

3) ಡಾ. ಎಂ. ಸಿದ್ಧಲಿಂಗಯ್ಯ ರವರ ಪ್ರಕಾರ :->

"ವ್ಯಕ್ತಿಯ ದೈಹಿಕ, ಮಾನಸಿಕ ಹಾಗೂ ಸಾಮಾಜಿಕ ಕ್ರಿಯೆಗಳನ್ನು ಸಮತೋಲನವಾಗಿ ಕಾಯ್ದುಕೊಂಡು ರೋಗದಿಂದ ದೂರವಿರುವುದೇ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣ."

4) ಜೆ. ಎಫ್. ವಿಲಿಯಮ್ಸ್ ರವರ ಪ್ರಕಾರ :->

"ವ್ಯಕ್ತಿಯು ತನ್ನ ಅತ್ಯುನ್ನತ ಸಾಧನೆಯಿಂದ ಸಂತೋಷಭರಿತನಾಗಿ ರಚನಾತ್ಮಕ ಕಾರ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಪಾಲ್ಗೊಳ್ಳುವ ಅವಕಾಶ ಒದಗಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಆರೋಗ್ಯ ಶಿಕ್ಷಣ" ಎಂದಿರುವರು.

IV) ಉಪಸಂಹಾರ :->

ನಾವಿಂದು ಸಂಕೀರ್ಣ ಔದ್ಯೋಗಿಕ ಸಮಾಜದ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಜೀವಿಸುತ್ತಿದ್ದೇವೆ. ಈ ತಾಂತ್ರಿಕ ಸಂಕೀರ್ಣತೆಗಳು ನಮ್ಮ ದಿನ ನಿತ್ಯದ ಜೀವನದ ಮೇಲೆ ಪ್ರತಿಬಿಂಬವನ್ನುಂಟು ಮಾಡಿವೆ. ರೋಗಾಣುಗಳಿಂದ ಅನೇಕ ರೋಗಗಳು ಹರಡುತ್ತಿವೆ. ಆಧುನಿಕ ವಿಜ್ಞಾನವು ನಮ್ಮ ದೇಹವನ್ನು ಆರೋಗ್ಯವಂತವಾಗಿರಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಸುರಕ್ಷಿತವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಳ್ಳಲು ಜ್ಞಾನ ಹಾಗೂ ಅನೇಕ ಸಾಧನಗಳನ್ನು ಒದಗಿಸಿದೆ. ದೇಹವನ್ನು ರೋಗಾಣುಗಳಿಂದ ದೂರವಿಟ್ಟಷ್ಟು ನಮ್ಮ ದೇಹವು ಆರೋಗ್ಯವಂತವಾಗಿರುತ್ತದೆ.

I) ಆಧಾರ ಗ್ರಂಥಗಳು :->

1) ಆರೋಗ್ಯ ಮತ್ತು ದೈಹಿಕ ಶಿಕ್ಷಣ

=> ಬಿ. ಬಿ. ಮುಶ್ಯಾಪ.

2) ಆರೋಗ್ಯ ಮತ್ತು ದೈಹಿಕ ಶಿಕ್ಷಣ.

=> ರಾಜಶೇಖರ ಎಸ್. ಹಿರೇಮಠ

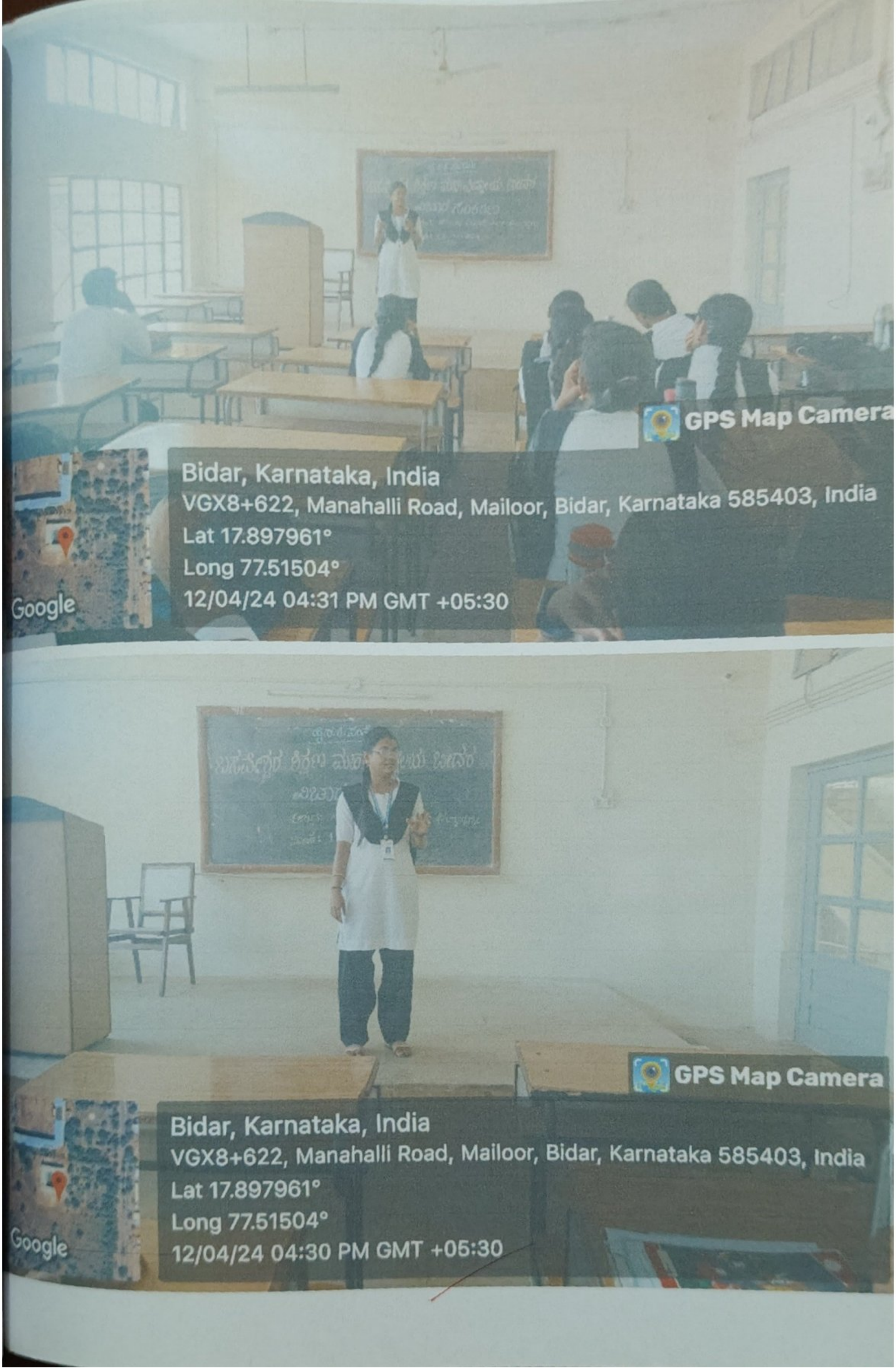
GPS Map Camera
Bidar, Karnataka, India
VGX8+622, Manahalli Road, Mailoor, Bidar, Karnataka 585403, India
Lat 17.897961°
Long 77.51504°
12/04/24 04:31 PM GMT +05:30
Google
GPS Map Camera
Bidar, Karnataka, India
VGX8+622, Manahalli Road, Mailoor, Bidar, Karnataka 585403, India
Lat 17.897961°
Long 77.51504°
12/04/24 04:30 PM GMT +05:30
Google

CamScanner